• हनुमान जयंती...

रखें ध्यान...

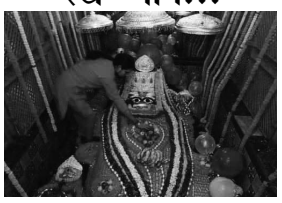

हनुमान जी कलयुग में भी जीवित देवता है। हनुमानजी बहुत जल्दी प्रसन्न होने वाले देवता हैं। हनुमान जयंती के मौके पर आइए जानते हैं किस प्रकार से हनुमानजी की उपासना करनी चाहिए ताकि उसका पूरा फल मिल सके। हनुमानजी को प्रसाद में बूंदी के लड्डू बहुत प्रिय होता है लेकिन हनुमान जी की उपासना में चरणामृत का प्रयोग नहीं किया जाता। हनुमानजी की पूजा करते समय ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना आवश्यक होता है। हनुमान जी की उपासना करते समय किसी भी प्रकार की कामुक चर्चा नहीं करनी चाहिए। हिन्दू धर्म के अनुसार हनुमानजी की उपासना का सबसे शुभ दिन मंगलवार और शनिवार का दिन का होता है। हनुमानजी की उपासना में लाल रंग के फूल, शुद्ध देसी घी या तिल के तेल का प्रयोग करना चाहिए। मंगलवार के दिन हनुमान जी को विशेष रूप से सिंदूर और लाल रंग की मिठाई प्रसाद स्वरूप जरूर चढ़ाएं। हनुमानजी की मूर्ति को घर में ऐसे रखना चाहिए कि उनकी दृष्टि दक्षिण दिशा की तरफ हो। हनुमानजी की मूर्ति को कभी भी पति-पत्नी के बेडरूम में नहीं लगाना चाहिए। हनुमानजी की पूजा से पहले भगवान राम जी का अवश्य ध्यान लगाएं। हनुमानजी की पूजा संध्या काल या सूर्यास्त के बाद में ही करना शुभ माना जाता है। हनुमान जी की उपासना में तुलसीदल जरूर अर्पित करना चाहिए।

ये जरूर करें...

हनुमान जयंती के दिन अगर आप किसी भी भगवान हनुमान के मंदिर में संपूर्ण चोला चढ़ाते हैं तो उसका भी खास लाभ होता है। अक्सर देखा जाता है कि हनुमान जी को सिंदूर चढ़ाया जाता है और कई लोग मन्नत पूरी होने के बाद भी हनुमानजी पर सिंदूर चढ़ाते हैं। भगवान हनुमान को सिंदूर अर्पित किया जाता है। उनका चोला हर मंगलवार और शनिवार को बदला जाता है। लेकिन इससे पहले उनकी प्रतिमा पर सिंदूरी लेप किया जाता है। गौर हो कि सिंदूर असीम ऊर्जा का प्रतीक है। इससे जीवन में सकारात्मकता आती है। हनुमान जी को सिंदूर का चोला चढ़ाने से एवं मूर्ति का स्पर्श करने से सकारात्मक ऊर्जा मिलती है।

• देवी-पूजा...

इस समय करें कन्या पूजन...

नवरात्र में बिना कन्या पूजा के व्रत अधूरा माना जाता है। कन्या पूजा अष्टमी या फिर नवमी के दिन की जाती है। यही नहीं इस दिन भक्तजन भंडारे का भी आयोजन करते हैं। चैत्र नवरात्र 2019
13 अप्रैल को सूर्योदय 05:43 पर है। अष्टमी प्रातः 08 :19 तक है और फिर उसके बाद नवमी शुरू हो जाएगी। भगवान राम का जन्म नवमी तिथि को कर्क लग्न तथा कर्क राशि में हुआ था। 13 अप्रैल को दिन शनिवार को मध्यान्ह नवमी तिथि होने के कारण रामनवमी 13 अप्रैल को ही मनाई जाएगी। नवमी अगले दिन 14 अप्रैल को प्रातः 06:04 बजे तक है। 9 दिन व्रत रहने वाले 14 को पारण करेंगे। नवरात्र पर्व के दौरान कन्या पूजन का बड़ा महत्व है। नौ कन्याओं को नौ देवियों के प्रतिबिंब के रूप में पूजने के बाद ही भक्त का नवरात्र व्रत पूरा होता है। अपने सामर्थ्य के अनुसार उन्हें भोग लगाकर दक्षिणा देने मात्र से ही मां दुर्गा प्रसन्न हो जाती हैं। वैसे तो कई लोग सप्तमी से कन्या पूजन शुरू कर देते हैं लेकिन जो लोग पूरे नौ दिन का व्रत करते हैं वह तिथि के अनुसार नवमी और दशमी को कन्या पूजन करने के बाद ही प्रसाद ग्रहण करके व्रत खोलते हैं। शास्त्रों के अनुसार कन्या पूजन के लिए दुर्गाष्टमी के दिन को सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण और शुभ माना गया है।
कन्या पूजा का शुभ मुहूर्त- प्रातः 06:41 से 08:13
11:56 से 12:47
02:28 से 03:19

दुर्गा अष्टमी पूजा विधि

- महा अष्टमी के दिन सुबह जल्दी उठें और स्नान करें।
- फिर देवी दुर्गा की प्रतिमा को अच्छे वस्त्रों से सुसज्जित करें। फिर उनकी प्रतिमा के सामने लाल पुष्प अर्पित करें।
- फिर कपूर, दीया, धूपबत्ती प्रज्वलित कर के आरती के साथ माता दुर्गा की पूजा करें।
- दुर्गा सप्तशती का पाठ करें और दुर्गा के मंत्रोच्चार करें।
- मां को मिष्ठान्न अर्पित कर उनके नामों का उच्चारण करें।
- दुर्गा जी को पंचामृत अर्पित करें। इसके साथ उन्हें पांच फल, किशमिश, सुपारी, पान, लौंग, इलायची आदि अर्पित करें।
- अंत में घी के दिये से मां की आरती करें।
- घर में नौ कन्याओं को पूरी और हलवे के प्रसाद का भोग लगाएं। और फिर उनका पैर छू कर आशीर्वाद लें।

देवी दुर्गा के नौ रूप है हर एक विशेष दिन देवी के एक विशेष रूप का पूजन किया जाता है जिनके नाम

शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री है। मासिक दुर्गा अष्टमी के दिन विशेष रूप से मां दुर्गा के महागौरी रूप का पूजन किया जाता है...

अष्टमी पर मां दुर्गा की पूजा

नवरात्र में दुर्गा पूजा के आठवें दिन को अष्टमी या दुर्गा अष्टमी के रूप में जाना जाता है। हिंदू धर्म के अनुसार इस दिन को सबसे शुभ दिन माना जाता है। सबसे महत्वपूर्ण दुर्गा अष्टमी जिसे महाष्टमी भी कहा जाता है। देवी दुर्गा के नौ रूप है हर एक विशेष दिन देवी के एक विशेष रूप का पूजन किया जाता है जिनके नाम शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री है। मासिक दुर्गा अष्टमी के दिन विशेष रूप से मां दुर्गा के महागौरी रूप का पूजन किया जाता है। इस दिन महागौरी के रूप की तुलना शंख, चन्द्रमा या चमेली के सफेद रंग से की जाती है, इस रूप में महागौरी एक 8 वर्ष की युवा बच्चे की तरह मासूम दिखती है, इस दिन वो विशेष शांति और दया बरसाती है। इस दिन के रूप में उनके चार हाथ में से दो हाथ आशीर्वाद और वरदान देने की मुद्रा में होते है तथा अन्य दो हाथ में त्रिशूल और डमरू रहता है साथ ही इस दिन देवी को सफेद या हरे रंग की साड़ी में एक बैल के ऊपर विराजित या सवार होते दिखाया गया है।

दुर्गा अष्टमी के दिन देवी दुर्गा के हथियारों की पूजा की जाती है और हथियारों के प्रदर्शन के कारण इस दिन को लोकप्रिय रूप से विराष्टमी के रूप में भी जाना जाता है। दुर्गा अष्टमी के दिन भक्त सुबह जल्दी से स्नान करके देवी दुर्गा से प्रार्थना करते है और पूजन के लिए लाल फूल, लाल चन्दन, दीया, धूप इत्यादि इन सामग्रियों से पूजा करते है, और देवी को अर्पण करने के लिए विशेष रूप से नैवेध को तैयार किया जाता है। साथ ही देवी के पसंद का गुलाबी फूल, केला, नारियल, पान के पत्ते, लोंग, इलायची, सूखे मेवे इत्यादी को प्रसाद के रूप में अर्पित किया जाता है और पंचामृत भी बनाया जाता है। यह पंचामृत दही, दूध, शहद, गाय के घी और चीनी इन पांचों सामग्रियों को मिलाकर बनाया जाता है, और एक वेदी बनाकर उसपर अखंड ज्योति जलाई जाती है, और हाथों में फूल, अक्षत को लेकर इस मंत्र का जाप किया जाता है। ***सर्व मंगलाय मांगल्ये, शिवे सर्वथा साधिके सरन्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते***
इसके बाद आप उस फूल और अक्षत को मां दुर्गा को समर्पित कर दें, फिर बाद में आप दुर्गा चालीसा का पाठ कर आरती करके पूजा करे। दुर्गा अष्टमी व्रत का उपवास स्त्री और पुरुष दोनों समान रूप से रख सकते है। कुछ भक्त बिना अन्न और जल के उपवास रखते है, तो कुछ भक्त दूध, फल इत्यादि का सेवन करके इस व्रत का उपवास करते है। इस दिन मांसाहारी भोजन करना या शराब का सेवन करना वर्जित होता है। व्रत करने वाले भक्तो को आराम और विलासिता से दूर रहते हुए नीचे सोना चाहिए। पश्चिमी भारत के कुछ क्षेत्रों में बीज बोने की परंपरा है जोकि मिट्टी के बर्तन में बोये जाते है, जिसमे बीज आठ दिन के पूजन तक 3 से 5 इंच तक बढ़ जाता है। अष्टमी के दिन उसको देवी को समर्पित करने के बाद में परिवार के सभी सदस्यों में इस बीज को वितरित कर दिया जाता है। इसे लोग प्रसाद स्वरूप अपने पास रखते है ऐसा माना जाता है कि इसको रखने से समृधि आती है। दुर्गा अष्टमी के दिन कुवांरी लड़कियों को भोजन कराने की परम्परा है माना जाता है कि इस दिन विशेष कर जो 6 वर्ष से 12 वर्ष के आयु वर्ग की लड़कियां हैं। वे पृथ्वी पर मां दुर्गा का प्रतिनिधित्व करती है। इस दिन 5, 7, 9 और 11 लड़कियों के समूह को भोजन के लिए आमन्त्रित कर उनके स्वागत में उनके पांव को पहले धोया जाता है, फिर उनका पूजन किया जाता है तत्पश्चात उन्हें भोजन में खीर, हलवा, पुड़ी, मिठाई इत्यादि खाद्य पदार्थ दिए जाते है और उसके बाद कुछ उपहार देकर उन्हें सम्मानित किया जाता है।

• मनोकामना...

धनलाभ के लिए...

कहते हैं कि नवरात्र में कुछ उपाय किए जाए तो समस्या जल्द से जल्द खत्म हो जाती हैं। नवरात्र के आखिरी दिन अष्टमी या नवमी को किसी एक खाली या शांत कमरे में उत्तर की दिशा की ओर अपना मुंह करके पीले आसन पर बैठ जाएं। अपने सामने तेल के 9 दीपक जलाएं और ये साधनाकाल तक जलते रहने चाहिए। इन 9 दीपकों के सामने लाल चावल की एक ढेरी बनाकर उस पर एक श्रीयंत्र रख लें। इस श्रीयंत्र का कुंकुम, फूल, धूप, तथा दीप से पूजन करें। इस पूरी क्रिया के बाद एक प्लेट पर स्वस्तिक बनाकर उसका पूजन करें। अब इस श्रीयंत्र को अपने घर के पूजा स्थल में स्थापित कर दें तथा शेष सामग्री को नदी में प्रवाहित कर दें। इस प्रयोग से आपको जल्दी ही अचानक धन लाभ होगा। किसी शिव मंदिर में जाएं। वहां शिवलिंग पर दूध, दही, घी, शहद और शक्कर चढ़ाते हुए उसे अच्छी तरह से स्नान कराएं। अब महादेवजी की चंदन, पुष्प एवं धूप, दीप आदि से पूजा-अर्चना करें। उसी दिन रात 10 बजे बाद अग्नि प्रज्वलित कर ऊं नमः शिवाय मंत्र का उच्चारण करते हुए घी से 108 आहुति दें। अब 40 दिनों तक नित्य इसी मंत्र का पांच माला जप भगवान शिव के सम्मुख करें। इससे आपकी मनोकामना जल्द पूर्ण होगी।

• मनोकामना होगी पूरी...

❑ नवरात्र के दौरान मां दुर्गा को उनकी प्रिय चीजें चढ़ाई जाएं तो वे जल्दी प्रसन्न होकर अपने भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूरी करती हैं। मां दुर्गा के मंदिर में अखरोट का भोग लगाने से अपार यश और कीर्ति की प्राप्ति होती है। जो लोग अपने जीवन में सफलता पाना चाहते हैं वे नवरात्र के दौरान मां दुर्गा के मंदिर में अखरोट का प्रसाद चढ़ाएं। यदि लंबे समय से आपकी कोई मनोकामना अधूरी रह गई है तो उसकी पूर्ति के लिए आप नवरात्र में मां दुर्गा को मोगरे का गजरा चढ़ाएं। इस उपाय को करने से आपकी मनोकामना शीघ्र पूरी होती है। मां दुर्गा को लौंग का जोड़ा और पान चढ़ाने से मान-सम्मान में वृद्धि होती है।